बद्री पांडे वल्द पं. गौरीदत्त मुक्ता

बद्री पांडे वल्द पं. गौरीदत्त

कहानी

मुक्ता

बद्री पांडे वल्द पं. गौरीदत्त

रमाशकर वल्य श्याम प्रताप बनाम राम सुभग वल्य केशभान हाजिर हों। रमा-शंकर...!

बद्री पांडे प्रतिदिन नपे-तुले शब्दों में पुकार लगाते हैं। इजलास के बाहर पुकार लगाते बद्री पांडे की पूंछों की ऐंठन से एक-एक शब्द बाहर आते ही जादू-सा असर करते हैं। मुवक्किल पहले बद्री पांडे को झुककर प्रणाम करने के बाद ही इजलास का रुख करते हैं। यह उनकी ऊँची कद-काठी, उन्नत ललाट और तराशी मूँछों का प्रताप है। मुस्कुराकर आशीर्वाद की मुद्रा में वे सिर भी हल्का-सा टेढ़ा कर देते हैं। किसी अबोध मुवक्किल की प्रणामी मुद्रा का खिंचाव यदि जेब तक पहुँचने की धृष्टता कर जाता है तो बद्री पांडे का क्रोध परशुराम के फरसे-सा तन जाता है। ईमानदारी और मूँछों के लिए समान रूप से चर्चित बद्री पांडे का दबाव हाकिमों पर भी है।

परम वैष्णव पं ० गौरीदत्त के पुत्र बद्री पांडे का शहर आना उनके दुराग्रह का ही परिणाम है। पिता पारंपरिक कर्म के उद्भट पक्षपर बेटे की कर्मकांड में तनिक भी रुचि न थी। संस्कृत श्लोक कंठस्थ करना बद्री पांडे के लिए यमराज के भैंसे से छेड़छाड़ करने जैसा दुस्साध्य था। पिता के यजमान की कृपा से आठवीं अनुत्तीर्ण होने के बावजूद बद्री पांडे सिविल कोर्ट में चपरासी हो गए।

शुरू के दिनों के सिविल कोर्ट बद्री पांडे के लिए धर्मराज युधिष्ठिर की न्याय सभा से कम न था। एक-एक न्यायाधीश को वे कमर तक झुक प्रणाम करते। कचहरी के पुराने वकील नवागंतुक युवा चपरासी की गर्दन छूती शिखा और आकंठ डूबी श्रद्धा देख कौतुक से हँसते। वर्षभर में ही एक मुकदमे के निर्णय ने उन्हें भ्रम में डाल दिया। उस भ्रम से वे उबर न सके। धर्मराज की पृथ्वी पर सजी न्याय सभा से उनका विश्वास उठ गया।

जिस दिन शहर का कुख्यात गुंडा, खूनी मुजरिम सबूत के अभाव में बाइज्जत रिहा होकर ताल ठोंकता अदालत से बाहर आया, बद्री पांडे की श्रद्धा धरती में समा गई

। अब वे हाथ जोड़कर मात्र औपचारिकता का निर्वाह कर लेते हैं।

वर्षो से पुकार लगाते बद्री पांडे कुछ दिनों से शब्दों पर अँटकने लगे हैं। शब्दों के समीकरण बदलने लगे हैं।

बद्री पांडे-वल्द गौरीदत्त-वल्द शून्य में वे कुछ टटोलने लगते हैं। रह-रहकर उनकी दृष्टि आकाश में टँग जाती है।

धर्मपत्नी के साथ पूजा-पाठ, व्रत-त्योहार की विरासत का पालन वे पूरी तन्मयता से करते चले आ रहे हैं। अब संतान-प्राप्ति हेतु पत्नी के साथ तीर्थों की परिक्रमा भी नित्य कर्म जैसी शामिल हो गई है।

कई तीर्थों के पवित्र कुंडों में स्नान करने के उपरांत भी मनोकामना पूर्ण नहीं हुई। पत्नी लीलावती का विवर्ण मुख देख वे डॉक्टर-वैद्य के पास भी पहुँचे, लेकिन निराशा ही हाथ लगी। नियति को प्रबल मान अपने मन को उन्होंने मन कामेश्वर की उपासना में लगा दिया। बद्री पांडे के हृदय का ओर-छोर लीलावती कभी न पा सकी है। पति की रुचि का भोजन बनाना, अनुकूल बने रहना ही उसके धर्म का सार है। पड़ोस की काँसा की धवल आत्मीय हँसी लीलावती को आमंत्रित करती रहती है। काँसा का पति लक्खीराम मुंसिफ मैजिस्ट्रेट का चपरासी है। कचहरी के पास बसे छोटे से मुहल्ले के बाशिंदा अधिकतर सिविल कोर्ट के चपरासी, दफ्तरी और टाइप बाबू हैं। ईंट जोड़कर बने कमरे पलस्तर-चूने के घरों में बदल गए हैं। बद्री पांडे का घर अपने स्वच्छ-सुंदर स्वरूप और चौड़े खुले गिन के लिए मुहल्ले में ईर्ष्या का विषय है।

" पंडिताइन, तनिक देर बाहर भी आ जाया करो। घर में कैसी मनसामारी में पड़ी रहती हो...!"

काँसा की बात लीलावती को अधीर करती है। वैसे भी काँसा का सिर उघाड़े मोहल्ले में स्वतंत्रता से विचरण करना और बेशर्मी से ठहाके लगाना लीलावती को अचंभित करता है। किशोरावस्था से ही पति के कड़े अनुशासन में रही वह कभी भी लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन नहीं कर पाती है।

" मैं सब समझती हूँ तुम्हारी बिरादरी के चक्कर " राम-राम यह कैसा कुवचन